स्वातंत्र्योत्तर भारतीय ग्रामीण स्थितियाँ एवं शिवमूर्ति का कथा साहित्य

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय

लखनऊ से हिन्दी साहित्य विषय में

पीएच०डी० की उपाधि

हेतु प्रस्तुत

शोध-सारांशिका

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करूणा
ESTABLISHED 1996

Chandrawati
शोधार्थी

कु० चन्द्रावती

नामांकन सं० : 1193/18

नमिता 07.08.24
शोध निर्देशक

डॉ० नमिता जैसल

सहायक आचार्य

हिन्दी विभाग

भाषा एवं साहित्य विद्यापीठ

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय) (NAAC: A++ ACCREDITED)

विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ-226025 (उ०प्र०)

2024

शोध–सारांशिका

साहित्य में सम्पूर्ण जीवन निहित होता है। साहित्य समाज का दर्पण है क्योंकि, साहित्यकार अपने साहित्य में सम्पूर्ण समाज के बिम्ब को प्रतिबिंबित कर देता है। वह समाज की तमाम विषमताओं असमानता, भेदभाव, आर्थिक विपन्नता, अन्धविश्वास तथा हर तरह की अन्यायकारी और शोषणकारी विद्रूपताओं के खिलाफ रचना का सृजन करता है, ताकि समाज में प्रतिकूल स्थितियों की जगह शांति और कर्तव्यबोध जैसे मूल्यों की स्थापना हो सके। प्रत्येक साहित्यकार अपनी रचनाधर्मिता के माध्यम से मानव हित की सर्वोच्चता का अनुसंधान करता है। साहित्य में प्रेमचंद, रेणु के बाद से सतत चली आ रही सामाजिक सरोकारों की परम्परा को जिन साहित्यकारों ने मुख्य रूप से संवर्धित करने का कार्य किया है उनमें शिवमूर्ति अग्रगण्य हैं। शिवमूर्ति की उपस्थिति साहित्य को एक नई दिशा की ओर ले जाती है। वे प्रेमचंद और रेणु की विरासत को एक कदम आगे ले जाते हुए दिखाई देते हैं। शिवमूर्ति ग्राम्य जीवन की गहन एवं सूक्ष्म अनुभूतियों के कथाकार हैं जो जनपक्षधरता को वरीयता देते हैं। उनका साहित्य लोक को समर्पित है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में सम्पूर्ण ग्रामीण जीवन तथा लोकचेतना के वैविध्यपूर्ण रूप को चित्रित किया है। उनकी रचनाएँ युगदर्पण की तरह तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक वातावरण को साकार करती हुई दिखाई देती हैं। वे समाज के सभी चिंतनशील एवं गंभीर विषयों की ओर ध्यान आकृष्ट करते हैं। शिवमूर्ति स्वतंत्र भारत के समकालीन कथाकार हैं। उनकी कथाभूमि ग्रामीण समाज है। उनकी कथाएँ पूरी दृढ़ता के साथ ग्रामीण जीवन के परिवर्तित रूपों एवं मूल्यों की पड़ताल करती हुई दिखाई देती हैं। उन्होंने जटिल एवं संश्लिष्ट होते हुए समय–समाज का गहन विश्लेषण किया है।

शिवमूर्ति की कथाओं में ग्राम्य जीवन की विविध विषमताओं तथा अन्तर्विरोधों का धरातलीय यथार्थ प्रस्तुत होता है। सामंतवादी व्यवस्था,

जमींदारी प्रथा, ठेकेदार, दलाल, तहसीलदार, अमीन, बिचौलिया, पूँजीपति–व्यवस्था, प्रभुत्वशाली वर्ग तथा अन्य सरकारी– प्रशासनिक तंत्र आदि अपनी कुटिल एवं निरंकुश प्रवृत्ति के चलते गरीब, मजदूरों, किसानों, दलितों, स्त्रियों को उनकी मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित कर हाशियाकृत कर देते हैं। शिवमूर्ति समाज की सभी विघटनकारी एवं विभाजनकारी दुष्प्रवित्तियों को नए कलेवर में अभिव्यक्त करते हैं। उनकी अधिकांशतः कहानियाँ ग्रामीण स्त्रियों की सबलता पर आधारित हैं। उन्होंने स्त्रियों के प्रतिरोधात्मक स्वर को प्रमुखता से उद्घाटन किया है। उनकी कथाओं में संघर्षरत स्त्रियों की अस्मिता को नए स्वरूप में प्रस्तुत किया गया है। स्त्री संचेतना पर आधारित उनकी कथाएँ है–कसाईबाड़ा, सिरी उपमा जोग, अकालदंड, तिरियाचरित्तर, ख्वाजा! ओ मेरे पीर, कुच्ची का कानून आदि। शिवमूर्ति के दो कहानी संग्रह 'केशर कस्तूरी' जिसके अन्तर्गत कुल छः कहानियाँ वर्णित है। दूसरी कहानी संग्रह 'कुच्ची का कानून' चार कहानियों का संकलन हैं। उनके तीन उपन्यास हैं 'त्रिशूल', 'तर्पण' तथा 'अगम बहै दरियाव'। उपन्यास 'त्रिशूल' जातियता तथा साम्प्रदायिकता की पृष्ठभूमि पर केंद्रित है। 'तर्पण' दो वर्गों के मध्य जातिगत अन्तर्व्दन्द पर आधारित है। 'अगम बहै दरियाव' उपन्यास कृषक जीवन की महागाथा है।

ग्रामीण क्षेत्रों की प्रगति जिस तरह अपेक्षित थी उस स्तर का विकास आजादी प्राप्ति के 70 वर्षों बाद भी नहीं नजर आया है। योजनाओं का कार्यान्वयन जमीनी स्तर पर असफल रहा है। सरकारी योजनाएँ कुछेक वर्गों तक सिमट कर रह गईं। निचले पायदान पर खड़ा आम जनमानस निरन्तर अभावों में जीने को विवश कर दिया गया है। ग्रामीण क्षेत्र की बहुसंख्यक आबादी आज भी मूलभुत आवश्यकताओं से वंचित नजर आती है। शिवमूर्ति उपेछित स्थितियों के जिम्मेदार कारकों की पहचान ही नहीं करते बल्कि बुनियादी तथ्यों को भी उजागर करते हैं। उनका सम्पूर्ण रचनाकर्म लोक जीवन के विविध पक्षों पर केंद्रित है। वे मानते है कि बिना धन संपत्ति और अवसर के न्यायपूर्ण विभाजन के सामाजिक असमानता नहीं मिट सकती है।

शिवमूर्ति के साहित्य के प्रति मेरा पहले से विशेष रुझान रहा है। उनकी साहित्यिक संवेदना और विचार दृष्टि मेरे विचारों के अनुकूल थी। उनकी भाषा शैली की वजह से उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व के प्रति मेरी जिज्ञासा बढ़ती गई। शिवमूर्ति के साहित्य की जो विषमताएँ हैं मैंने उन सभी असंगतियों को न सिर्फ देखा है बल्कि अत्यधिक करीब से समझा और महसूस किया है। उनके पात्रों की संघर्षशीलता व तार्किक चेतना ने मुझे बहुत प्रभावित किया। अन्याय के प्रति प्रतिरोध की संस्कृति, निश्चित ही एक नई जीवन दृष्टि का सृजन करती है। ऐसे तमाम कारण रहे हैं जिससे मैंने अन्य दूसरे विषय पर काम करने की बजाय शिवमूर्ति के तथ्यपरक साहित्य को शोध विषय के रूप में चुना। शिवमूर्ति के साहित्य का अध्ययन करना और उस पर शोधकार्य करना निश्चय ही मेरे लिए गौरव की बात है।

शिवमूर्ति के कथासाहित्य में आजादी के बाद के ग्राम्य–समाज की परिवर्तित स्थितियों को आधार बनाकर शोधकार्य हेतु मैंने अपने शोध प्रबन्ध को शीर्षक दिया है – 'स्वातंत्र्योत्तर भारतीय ग्रामीण स्थितियाँ एवं शिवमूर्ति का कथा साहित्य'।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध–प्रबंध के उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. कथाकार के रूप में शिवमूर्ति जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण भारतीय जन–जीवन के कथाकार के रूप में शिवमूर्ति जी की रचनाओं का विवेचन करना।
3. कालक्रम में शिवमूर्ति जी से पूर्व के एवं उनके समकालीन ग्रामीण जनजीवन के कथाकारों का तुलनात्मक विश्लेषण करना।
4. शिवमूर्ति जी के कथासाहित्य में उपस्थित ग्रामीण परिवेश के विविध आयामों का विवेचन करना।

5. शिवमूर्ति जी के कथासाहित्य में पाए जाने वाले पात्र विविधीकरण की अनुशीलन करना।
6. ग्रामीण जीवन के पिछड़े, अशिक्षित व जातिगत शोषण के शिकार वर्ग के कथाकार के रूप में शिवमूर्ति जी का अध्ययन करना।
7. अपने विरुद्ध अनेक कारणों से होने वाले दोयम दर्जे के व्यवहार, शोषण व अन्याय के विरुद्ध मुखर आवाज बुलंद करने वाली स्त्रियों के कथाकार के रूप में शिवमूर्ति जी के कथासाहित्य का विवेचन करना।
8. ग्रामाँचलिक बोलियों व भाषा के पैरोकार कथाकार के रूप में शिवमूर्ति जी के कथा साहित्य का विश्लेषण करना।
9. ग्रामीण लोकगीतों व लोकोक्तियों के कथाकार के रूप में शिवमूर्ति जी के कथा साहित्य का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न

प्रस्तुत शोध कार्य के अंतर्गत निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास हुआ है–

1. क्या शिवमूर्ति जी ग्रामीण भारतीय परिवेश के कथाकार हैं?
2. क्या शिवमूर्ति जी ग्रामीण जीवन के शोषण, अन्याय व अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाने वाले कथाकार हैं?
3. क्या शिवमूर्ति जी के कथा साहित्य में वर्णित अधिकांश स्त्री पात्र अपने विरुद्ध होने वाले अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करती नजर आती है?
4. क्या शिवमूर्ति जी भारतीय कृषक जीवन की चुनौतियों, समस्याओं व अन्याय को बेधड़क चित्रित करने वाले कथाकार है?
5. क्या शिवमूर्ति जी के कथा साहित्य में अभिव्यक्त ग्राम्य जनजीवन अपनी सम्पूर्णता में उपस्थित होता है?
6. क्या शिवमूर्ति जी की भाषा में ग्रामीण अँचल में प्रचलित बोलियों, लोकोक्तियों व लोकगीतों का प्रचुर प्रयोग हुआ है?

शोध परिकल्पना

प्रस्तुत शोध कार्य में रचित शोध परिकल्पना के मुख्य तत्व निम्नवत हैं–

1. शिवमूर्ति जी ग्रामीण जीवन की यथार्थ अनुभूतियों के सफल कथाकार हैं।
2. शिवमूर्ति जी ग्रामीण जीवन के पारम्परिक अन्याय, शोषण व अत्याचार के प्रतिकार के तथा दलित, शोषित, स्त्री व अल्पसंख्यक वर्ग से सहानुभूति रखने वाले कथाकार हैं।
3. शिवमूर्ति जी अपने कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन को प्रतिकूलतः प्रभावित करने वाली सभी समस्याओं– अशिक्षा, गरीबी, महँगाई, बेरोजगारी, जातिगत भेदभाव व लैंगिक भेदभाव को मुखरता से अभिव्यक्त करने वाले कथाकार हैं।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोधकार्य 'सैद्धांतिक शोध पद्धति' पर आधारित है। इसके अंतर्गत शोध विषय की वस्तुपरक विवेचन व विश्लेषण किया गया है। तुलनात्मक अध्ययन के तरीके का भी यथास्थान प्रयोग किया गया है। शोधकार्य में वैचारिक पूर्वाग्रहों व दुराग्रहों से बचा गया है।

शोध उपयोगिता

1. शिवमूर्ति के समकालीन समाज के यथार्थ की पहचान होगी।
2. शिवमूर्ति के लेखन विषय से पाठकों एवं अनुसन्धानकर्ताओं की पहचान होगी।
3. शिवमूर्ति के साहित्य के माध्यम से ग्राम्य–जीवन की सभी उपेछित स्थितियों का ज्ञात होगा।
4. प्रस्तुत शोध विषय के माध्यम से जीवन के विविध संवेदना आयामों की पहचान होगी।
5. शिवमूर्ति के कथा–साहित्य के माध्यम से वंचित, शोषित तथा उत्पीड़ित वर्ग की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक स्थिति की पहचान होगी।

6. प्रस्तुत शोध के माध्यम से अन्याय, अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष की नई चेतना दृष्टि के विकास को दिशा मिलेगी।
7. प्रस्तुत शोध के माध्यम से परम्परागत सामाजिक विद्रूपताओं से निजात के लिए उचित समाधान का सुझाव निकलेगा।

अध्ययन विभाजन

प्रस्तुत शोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय में विषय प्रवेश की दृष्टि से शिवमूर्ति के जीवन एवं लेखन का सम्पूर्ण परिचय हो इसलिए शीर्षक **'शिवमूर्ति का व्यक्तिव व कृतित्व'** दिया गया है। प्रस्तुत अध्याय को मुख्य रूप से दो चरणों में विभाजित किया गया है। प्रथम चरण में **'व्यक्तित्व परिचय'** जिसके अन्तर्गत कुल पाँच उपचरण हैं। द्वितीय चरण में **'कृतित्व'** का वर्णन है, इसमें भी पाँच उपचरण है। इस अध्याय में शिवमूर्ति के जीवन–परिवेश तथा परिस्थिति और प्रभाव को जानने की कोशिश की गई है। उनके व्यक्तित्व तथा लेखन निर्माण की सभी सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रक्रिया को उजागर किया गया है। उनके प्रारंभिक जीवन, परिवार, परिवेशगत स्थितियाँ, शैक्षिक स्तर एवं जीविका, वैवाहिक जीवन, रचनात्मक प्रेरणा, यात्रा, पुरस्कार–सम्मान आदि की प्रस्तुति हुई है।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक है – **'ग्रामीण भारतीय स्थितियों के कथाकार और शिवमूर्ति का कथासाहित्य'**। इस अध्याय को तीन प्रमुख बिंदुओं में विभक्त किया गया है। प्रथम बिंदु स्वतंत्रतापूर्व का ग्राम जीवन तथा स्वतंत्रतापूर्व के कथा साहित्य' पर आधृत है। दूसरा बिंदु है स्वतंन्त्र्योत्तर ग्राम जीवन एवं स्वतंन्त्र्योत्तर कथा साहित्य। तीसरा बिन्दु है 'समकालीन कथा साहित्य में शिवमूर्ति का वैशिष्ट्य। इस अध्याय के माध्यम से स्वतंत्रतापूर्व से लेकर समकालीन युगीन समस्याओं के परिवर्तित रूपों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें प्रेमचंद, रेणु, जयशंकर प्रसाद से लेकर स्वतंन्त्र्योत्तर कथाकारों रामदरश मिश्र, विवेकी राय, श्री लाल शुक्ल तथा समकालीन परिप्रेक्ष्य में शिवमूर्ति के साहित्य की विशिष्टता को प्रस्तुत किया गया है

तृतीय अध्याय का शीर्षक है – **'शिवमूर्ति के कथा साहित्य में चित्रित ग्रामीण परिवेश एवं संवेदना के विविध आयाम'**। इस अध्याय में ग्राम्य–जीवन के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक आयामों का विस्तृत विवेचन किया गया है। शिवमूर्ति की कथाओं के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों असमानता, अमानवीयता, संवेदनहीनता, स्त्री–उत्पीड़न तथा पारिवारिक एवं नैतिक मूल्यों के विघटन को रूपायित किया गया है। 'आर्थिक आयाम' के अन्तर्गत ग्राम्य जनजीवन में व्याप्त समस्याओं निर्धनता, महंगाई, बेरोजगारी, भूमिहीनता, ऋणग्रस्तता तथा बाजारवाद से उपजी समस्याओं का वर्णन किया गया है। 'राजनैतिक आयाम' में राजनैतिक मूल्यों के ह्रास, अवसरवादिता तथा ग्राम–पंचायती व्यवस्था के विकृत रूप को समझा गया है। 'सांस्कृतिक आयाम' के तहत लोक संस्कृति के विविध पहलुओं पर्व–त्योहार, रीति–रिवाज, लोकगीत, रहन–सहन, आचार–व्यवहार, बोली–भाषा, खेत–खलिहान, प्रकृति प्रेम तथा कृषि सम्बंधित संस्कृति को उजागर किया गया है।

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है– **''शिवमूर्ति के कथा साहित्य में पात्र योजना'**। इस अध्याय में पात्र की अवधारणा व स्वरुप को व्यवस्थित करते हुए शिवमूर्ति के साहित्य में उद्धृत पात्रों की संवेदना तथा संभावनाओं का अवलोकन किया गया है। पात्रों को चार वर्गों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक वर्ग का पात्र अपने युग परिवेश एवं स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है।

पंचम अध्याय का शीर्षक है– **''शिवमूर्ति के कथा साहित्य में शिल्प विधान'**। इस अध्याय में भाषा शिल्प की प्रविधि, बिम्ब–प्रतीक योजना तथा लोकोक्ति एवं मुहावरे आदि का समावेशन किया गया है। शिवमूर्ति की भाषागत तथा शैलीगत विशेषताओं पर विचार विमर्श किया गया है। उनकी कथा भाषा लोक से उद्भूत है। किस्सागोई, लोकगीत आदि की बहुलता को दर्शाया गया है। उनकी भाषिक संरचना आगत, देशज, उर्दू, भोजपुरी, संस्कृत, तद्भव–तत्सम तथा अंग्रेजी मिश्रित भाषा है।

शोध अध्याय के अन्त में उपसंहार लिखा गया है। तत्पश्चात शिवमूर्ति द्वारा दिए गए साक्षात्कार को वर्णित किया गया है।

अध्ययन के निष्कर्ष

शिवमूर्ति की रचनात्मकता का आधार उनके जीवन–अनुभव का आख्यान है। वे मानवीय संवेदनाओं तथा अनुभव की सघनता के आधार पर उस बिन्दु का अवलोकन करते हैं जहाँ से जनसाधारण का स्पष्ट चेहरा नजर आता है। उन्होंने हाशियाकृत समाज की चेतना का बखूबी अंकन किया है। चूँकि शिवमूर्ति के साहित्य का केन्द्र गाँव है इसलिए गाँव में क्या चल रहा है, क्यों चल रहा है तथा कैसे चल रहा है, का वे समग्रांकन करते हैं। उनके साहित्य के माध्यम से समकालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व धार्मिक पहलुओं को नये दृष्टिकोण से समझा गया है। उनकी कथाओं में ग्रामीण जीवन के रेशे–रेशे का सजीव विश्लेषण किया गया है। उनकी कथाएँ अभिशप्त जीवन का यथार्थ दस्तावेज है। ग्रामीण जनजीवन में व्याप्त निर्ममता, क्रूरता, गरीबी–भुखमरी, अंधविश्वास तथा शोषण के तमाम षड्यन्त्रों में जूझते आमजन की व्यथा–कथा को वे कथाओं में चित्रित करते हैं। उन्होंने जिस संवेदना के साथ स्त्री व दलित जीवन की विडम्बना को विवेचित किया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। उनकी सभी कथाएँ अन्याय के विरूद्ध तथा न्याय को समर्पित हैं। उन्होंने स्त्रियों की स्थिति के माध्यम से ग्राम्य–जीवन के विविध रूपों का चित्रण किया है। कहानी 'कसाईबाड़ा' एवं 'अकालदंड' में पंचायती न्याय व्यवस्था की क्रूरता व प्रशासनिक तंत्र की निरंकुशता को दिखाया गया है। ग्राम–प्रधान की स्वार्थपरक व षड्यन्त्रकारी मानसिकता को 'सुगनी' ही सामने लाती है। उसी के माध्यम से प्रधान की काली करतूतों का पर्दाफाश होता है। 'अकालदंड' कहानी में महिलाओं के माध्यम से लोगों की अकालग्रस्त संवेदनविहीन मानसिकता का पता चलता है।

कहानी 'तिरियाचरित्तर' व 'कुच्ची का कानून' पितृसत्तात्मक वर्चस्व की पोल खोलती हैं। कथा उस मानसिकता पर करारा व्यंग्य करती हैं जो स्त्री को उपभोग की वस्तु मात्र समझते हैं। 'विमली' जहाँ अपनपे अस्तित्व की रक्षा करते हुए निरन्तर संघर्ष करती हुई दिखाई देती है वहीं 'कुच्ची' उसी पंचायत

से अपने गरिमापूर्ण जीवन जीने के अधिकार को छीन लेती है, जो पंचायत विमली के माथे पर कलंक का टीका दाग देता है। उपयास 'तर्पण' की कथा–विन्यास 'रजपतिया' के साथ हुई बदसलूकी के साथ आगे बढ़ती है।

शिवमूर्ति ने अपनी कथाओं में स्त्रियों के स्वाभिमान, सम्मान व अस्मिता को बहुविध सन्दर्भों में विवेचित किया है। शिवमूर्ति समकालीन साहित्यकारों में प्रमुख स्थान रखते हैं। वे ग्राम्य–जीवन के कथाकार हैं। उनका सम्पूर्ण कथा साहित्य समाज की जटिल एवं संश्लिष्ट विसंगतियों पर केन्द्रित है। उन्होंने अपनी कथाओं में ग्राम्य–जीवन की सूक्ष्म संवेदनाओं तथा विषमताओं का प्रमुखता से उद्‌घाटन किया है। समाज के प्रति प्रतिबद्ध शिवमूर्ति के कथा विषय उनके आस–पास का परिवेश है। उन्होंने जिए हुए तथा भोगे हुए यथार्थ को कथाओं में शब्दबद्ध किया है। वे कथाओं में अपने समय–समाज की यथार्थता को पूरी प्रमाणिकता के साथ प्रस्तुत करते हैं। शिवमूर्ति का सम्पूर्ण जीवन गाँव की माटी में रचा बसा है। जिसकी अभिव्यक्ति वे कथाओं में करते हैं। शिवमूर्ति प्रेमचन्द्र तथा फणीश्वरनाथ रेणु की कथा परंपरा को आगे तक ले जाने वाले कथाकारों में से हैं। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय गाँवों की कायदे से सुध लेने वाले साहित्यकारों में शिवमूर्ति का नाम अग्रगण्य है।

प्रस्तुत अध्यायों के विश्लेषणात्मक अध्ययन के आधार पर इस बात की प्रतीति होती है कि शिवमूर्ति ग्राम्य–जीवन की अनुभूतियों के सजग कथाकार हैं। ग्राम्य–जीवन की परिवर्तित प्रत्येक गति पर उनकी कथाभूमि पकड़ है। स्वातंत्र्योत्तर ग्रामीण जीवन के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक आयामों का विस्तृत विवेचन करते हैं।

शिवमूर्ति का जीवन अनेक कठिनाइयों में तपकर तैयार हुआ है। उनका जन्म एक सीमान्त किसान के परिवार में गुजरा है। पिता के गृहत्यागी हो जाने के बाद उन्हें आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ा। घर–परिवार की जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए उन्होंने अपनी पढ़ाई–लिखाई जारी रखी। उन्होंने मेले में मजमा लगाकर, दवाएँ बेचकर, फेरी लगाकर, स्टैंड लगाकर

तथा सिलाई आदि का काम करके अपनी अजीविका चलाई। अध्ययन व अध्यापन के बाद वे रेलवे में नौकरी करने लगे थे। तत्पश्चात् 1977 में उनका चयन 'ग्रामीण बिक्री कर अधिकारी' के रूप में हुआ। 2010 में वे सेवानिवृत्त हो चुके हैं। वर्तमान में वे साहित्य लेखन कार्य में वे पूरे मनोयोग से ध्यान दे रहे हैं।

साहित्य के प्रति उनकी रूचि पिता द्वारा सुनाऐ गए रामचरित मानस की पंक्तियों, ममेरी व फुफेरी बहन के किस्से कहानियों तथा नाच–नौटंकी के संवादों आदि द्वारा उत्पन्न हुई। प्रेमचन्द, रेणु तथा वृन्दावन लाल वर्मा आदि की कथाओं ने उन्हें प्रभावित किया। शिवमूर्ति की सृजनशीलता में उनके जीवन तथा समय–समाज की गहरी छाप है। उन्हें प्रकृति ने विशेष उपहार दिया अति संवेदनशीलता का, पर दुखकातरता का तथा अतीन्द्रियता का। शिवमूर्ति को ग्राम्य जीवन की विद्रूपताओं तथा वेदनाओं का बड़ा अनुभव रहा है। उन्हीं अनुभवों के आधार पर उनके साहित्य की निर्मिती होती है। उन्होंने कुल दस कहानियाँ तथा तीन उपन्यास लिखकर साहित्य जगत में महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। उनकी रचनाओं में गाँव के विविध रूपों का चित्रांकन किया गया है।

साहित्य की ऐतिहासिक परंपरा से यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि ग्राम्याँचलिक कथा साहित्य हिन्दी साहित्य की बड़ी उपलब्धि रही है। तत्कालीन परिस्थितियों ने ग्राम्य जीवन की अनगिनत समस्याओं की तरफ साहित्याकारों का ध्यान खींचा। प्रेमचन्द, रेणु, जयशंकर प्रसाद, निराला तथा शिवप्रसाद सिंह आदि कथाकारों ने अपनी कथाओं में समाज की विकृत व जर्जर स्थिति का विश्लेषण किया है। परतंत्र भारत की सभी विसंगतियाँ बेरोजगारी, गरीबी–भुखमरी, भेदभाव, जाति–पात, अशिक्षा, अज्ञानता, शोषण आदि स्वतंत्र भारत में यथावत् रहीं है। पूर्व की सभी समस्याएँ नये कलेवर में समाज में विद्यमान रही हैं। शिवमूर्ति ग्राम्य–जीवन के सजग व सच्चे कथाकार के रूप में सामने आते हैं। उन्होंने अपनी कथाओं में समाज के जरूरी एवं गंभीर विषयों का उद्घाटन किया है। उन्होंने उन सभी पहलुओं को उजागर किया है। जो अब तक अनछुए रहे हैं। वे ग्राम्य समाज की दुर्दशा के

जिम्मेदार घटकों की न सिर्फ पहचान करते हैं बल्कि उससे निपटते का उचित मशविरा भी प्रस्तुत करते दिखाई देते हैं। उनकी कथाएँ केशर कस्तूरी, कुच्ची का कानून तथा उपन्यास त्रिशूल, तर्पण व 'अगम बहै दरियाव' लोकतांत्रिक भारत की सच्ची तस्वीर को चित्रांकित करती है। उनकी कहानियाँ आधुनिकीरण तथा बाजारवाद के दौर में विकास के झूठे दावों का पर्दाफास करती हैं। गाँव आज भी परंपरागत ढंग से चलायमान है जहाँ सामंतवादी व्यसस्था का निरंकुश रूप अप्रत्यक्ष व प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित प्रतीत होता है। पूर्व में जो शोषणकारी तत्व थे जैसे सेठ, महाजन, करिंदे, बिचौलियों वे सभी स्वतंत्र भारत में सरकारी नीतियों के माध्यम से पूरे अधिकार के साथ समाज को नियंत्रित करने लगे थे। कहानी 'कसाईबाड़ा' के प्रधान व लीडर पंचायती न्याय व्यवस्था के अगुवाकार होते हैं। दोनों ही सरकारी आदमी होते हैं लेकिन गाँव की विदुप स्थिति के जिम्मेदार भी वही होते हैं। कहानी 'अकालदंड' का सिक्रेटरी भी सरकारी तंत्र का हिस्सा होता है। वह अकालग्रस्त गाँव में अनाजों की कालाबाजारी करता है, वहीं गाँव के जरूरतमंद लोग ठगे से रह जाते हैं। वह अपनी पॉवर का दुरूपयोग ही करता नजर आता है। स्त्रियों को प्रलोभन देकर उनका शोषण करता है। उपन्यास 'अगम बहै दरियाव' कृषक जीवन की अनेकानेक विषमताओं को उजागर करता है। किसान, मजदूर, दलित आदि की स्थितियाँ सदैव से विपन्न रही है। भूमंडलीकरण के युग में जहाँ देश उत्तरोत्तर प्रगति की सीढ़ियाँ चढ़ रहा है वहीं ग्रामीण जीवन तथा कृषक समूह स्थिर नजर आता है। ग्राम्य विकास को सभी योजनाएँ धरातलीय स्तर पर असफल रही हैं। शिवमूर्ति की कथाएँ यथास्थितिवाद के विरोध को स्वर प्रदान करती हैं।

'शिवमूर्ति का सम्पूर्ण कथा साहित्य ग्राम्य–जीवन की अव्यवस्था तथा अनियमितता को प्रमुखता से उजागर करता है। उनकी कथा के केन्द्र में किसान ,दलित, गरीब व स्त्री जीवन के विविध पक्ष हैं। ग्रामीण जीवन में व्याप्त वैषम्य, जातिगत असमानता, अमीरी–गरीबी, श्रेष्ठता का दंभ तथा निम्नता में

देखा जा सकता है। वे अभावग्रस्त वंचित तथा सुविधा सम्पन्न वर्ग के मध्य के अन्तर्विरोध को सजीवता से अभिव्यक्त करते हैं। सरकार द्वारा आयोजित तमाम जनकल्याणकारी उपक्रमों के बावजूद भी गाँव का आम जनमानस अभिशप्त जीवन जीने को विवश हैं। नेताओं के बड़े–बड़े चुनावी दावे जीतते ही विलुप्त हो जाते है। कहानी 'बनाना रिपब्लिक' में देखा जा सकता है कि सामंतवादी मानसिकता के प्रभुत्वशाली लोगों का पंचायती व्यवस्था में एकमात्र शासन चलता है। वे सभी सरकारी योजनाओं को अपनी तिजोरी में भरकर रखते हैं। मनरेगा की मद, पेंशन, तथा तमाम कल्याणकारी सुविधाओं के माध्यम से स्वयं को समृद्ध करते दिखाई देते हैं। शिवमूर्ति की कथाएँ व्यवस्था के परिवर्तन की कथाएँ हैं। वे आम जनमानस की बदलती चेतना को साहित्य में रूपायित करते हैं। 'बनाना रिपब्लिक' कहानी में दलित व्यक्ति जग्गू का ग्राम प्रधान बनना, परिवर्तित परिवेश तथा बदलती जनजाग्रति को नये दृष्टिकोण के साथ परिभाषित किया गया है। उनके उपन्यास 'तर्पण' के माध्यम से देखा जा सकता है कि शोषित उपेक्षित वर्ग अपने हक अधिकारों के लिए किस प्रकार एकजुट होकर संघर्ष करते हैं। इस तरह की बदली हुई मानसिकताओं को शिवमूर्ति ने दिया है। कहानी अकालदंड हो या कसाईबाड़ा, तिरियाचरित्तर या कुच्ची का कानून सभी स्त्रीप्रधान कथाएँ हैं। सभी स्त्रियाँ अपनी अस्मिता के लिए निरंतर संघर्षशील नजर आती हैं। शिवमूर्ति स्त्रियों के प्रति विशेष संवेदना रखते हैं। वे उनकी कारूणिक दशा, वेदना, तिरस्कार, सम्मान तथा उत्पीड़न की मार्मिक अभिव्यक्ति करते हैं।

शिवमूर्ति प्रकृति प्रेमी साहित्यकार हैं। उन्होंने कथाओं में लोक संस्कृति के विभिन्न रंगों को रेखांकित किया है। खेत–खलिहान, पशु, गीत–संगीत से लयबद्ध जीवन को बखूबी चित्रित किया है। उन्होंने जितनी अहमियत किसी पात्र को दी है उतनी ही अहमियत प्रकृति–परिवेश तथा लोक संस्कृति को दी है। प्रकृति चित्रण के माध्यम से उन्होंने समाज की विघटनकारी नीतियों को उजागर किया है। वे तहस–नहस होते पर्यावरण पर चिंता व क्षोभ भी व्यक्त

करते दिखाई देते हैं। वे प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन विशेष प्रयोजन से करते हैं। अपने स्वार्थ व हित में लोग अपनी प्राचीन विरासतों को खोता जा रहा है जिसका चिंतन शिवमूर्ति कथाओं में व्यक्त करते हैं।

'शिवमूर्ति के कथासाहित्य में पात्र योजना' के अन्तर्गत पात्रों को छः भागों में वर्गीकृत किया गया है। शिवमूर्ति की कथाओं में प्रयुक्त सभी पात्र उनके समय–समाज के वास्तविक किरदार हैं। वे सभी ऐसे चरित्र हैं जो किसी न किसी तरीके से वंचित शोषित रहे हैं। उनकी जीवंतता तथा जीवटता ने शिवमूर्ति को प्रभावित किया। उनकी कथाओं के पात्र उनके युग–परिवेश की यथार्थता को बयान करते हैं। वे विभिन्न वर्ग–समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रत्येक पात्र यथार्थ को भोगता तथा उसकी अनुभूति करता हुआ नजर आता है। उनके यहाँ पात्र दलित स्त्री किसान मजदूर, हैं जो सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक रूप से अक्षम है। वहीं सामंती मानसिकता के लोगों का भी चरित्र–चित्रण द्रष्टव्य है। जो मत्स्य न्याय के आधार पर गरीब व मजलूग का चतुर्दिक शोषण करते हैं।

शिवमूर्ति के पात्रों की अपनी स्वतंत्र पहचान विकसित होती है। वे अन्याय–अत्याचार के खिलाफ आवाज बुलंद करने वाले हैं। वे अदम्य जिजीविषा तथा महत्वाकाँक्षा से परिपूर्ण नजर आते हैं। उनके पात्रों की यही विशिष्टता है कि वे परिस्थितियों के आगे घुटने नहीं टेकते बल्कि आँखों में आँखों डालकर प्रतिकार करने की क्षमता रखते हैं। शिवमूर्ति पात्रों के माध्यम से समाज की विषमताओं व असमानता का उद्‌घाटन तो करते ही हैं साथ ही मानवीय जीवन मूल्यों की स्थापना भी करते हैं। 'कुच्ची का कानून' कहानी के माध्यम से उन्होंने विधवा महिलाओं की सामाजिक सहभागिता तथा मातृशक्ति की पुनस्थार्पना जैसे विषयों को प्रस्तुत किया है। कुच्ची ऐसी सशक्त स्त्री पात्र है जो ताउम्र विधवा बनकर नहीं रहना चाहती है। वह अपनी तार्किक वाक्‌पटुता के माध्यम से न्यायपूर्ण व गरिमापूर्ण जीवन जीने की वकालत

करती है। शिवमूर्ति के यहाँ पात्र अधिकांशतः अशिक्षित तथा निरक्षर नजर आते हैं। ग्रामीण जीवन के इन सभी चरित्रों में क्रांतिकारी चेतना का प्रस्फुटन दिखाई देता है।

शिवमूर्ति की भाषा का उद्‌गार लोकजीवन के परिवेश से है। कथाओं के वाक्य–विन्यास, लोकोक्ति–मुहावरे लोकगीत आदि ग्राम्य–परिवेश से बहुतायत करते हैं। उनके कथ्य–बिम्ब इतने सहज स्वाभाविक रूप से उभर कर सामने आते हैं कि पाठक स्वयं को उस प्रसंग का हिस्सा मान लेता है। शिवमूर्ति की भाषा हर तरह के बनावटीपन से सर्वथा मुक्त है। उनके यहाँ भाषा, संवाद, व्यग्यं–विनोद आदि पात्र व प्रसंग के अनुकूल प्रयुक्त हुए हैं। ठेठपन व सपाटबयानी की वजह से उनकी भाषा जीवन से सम्बद्ध भाषा है। जीवन के हर्ष–विषाद व राग–द्‌वेष उनकी भाषा शैली के माध्यम से स्वाभाविक रूप से उभर कर सामने आता है, जिससे वह कथाओं को जीवंत बनाता है। उनका भाषिक पक्ष बेहद प्रभावशाली व समृद्ध है। उनके कहने शैली के ढ़ंग संजीव हो उठती है। उन्होंने साहित्य में संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी शब्दों का भी यथोचित प्रयोग किया है।

शिवमूर्ति ने कथाओं में तत्कालीन समाज की गंभीर एवं ज्वलंत समस्याओं का सशक्त अंकन किया है। उन्होंने समाज में व्याप्त विविध वर्ण्य विषयों का यथार्थ चित्रण किया है। उनका कथा साहित्य अनुभवजन्य एवं व्यापक दृष्टिकोण का आधार है। ग्राम्य–जीवन के परिवर्तित विविध पहलुओं, विषमताओं, समस्याओं तथा संभावनाओं आदि को वे मुखरता से अभिव्यंजित करते है। उनकी कथाओं में गाँव अपनी समस्त अच्छाइयों एवं कमियों के साथ मुखरित हुआ है। उन्होंने सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक वैषम्यता, अमीर–गरीब ऊँच–नीच, छुआछूत–जाति–भेद, स्त्री–पुरूष किसान–मजदूर तथा वर्ग सम्प्रदाय आदि के नकारात्मक व सकारात्मक स्थितियों का विश्लेषण किया है। वे अन्ततः मनुष्यता के स्थापन तथा समानता को समाज की सर्वोपरि चीजों में

से एक मानते हैं। वे ग्राम्य समाज के बनते–बिगड़ते समीकरण तथा परिवर्तित परिवेश को पूरी ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त करते हैं। प्रगतिशीलता, जागरूकता, सृजनशीलता, स्वाभाविकता, सहजता, प्रगल्भता, विचारों की नवीनता, प्रमाणिकता, जीवन–समाज के प्रति व्यापक मानवतावादीं दृष्टिकोण अथाह संवेदनाओं, संभावनाओं तथा सुझावों से शिवमूर्ति का कथा साहित्य हिंदी साहित्य जगत में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है।

❍❍